ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 49 कुल पृष्ठ-8 5 से 11 अक्टूबर, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 आ. कृ.-07

मानव सेवा प्रतिष्ठान का रजत जयन्ती समारोह

दिनांक 23 व 24 सितम्बर, 2023 की तिथियों में भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की

मानव सेवा प्रतिष्ठान अपने स्थापना काल से ही जनोपयोगी कार्य कर रहा है

– स्वामी आर्यवेश

दिनांक 23 व 24 सितम्बर, 2023 (शनिवार व रविवार) की तिथियों में समाज सेवी संस्था मानव सेवा प्रतिष्ठान का रजत जयन्ती समारोह विभिन्न प्रकल्पों के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द जी के 200वें जन्म जयन्ती वर्ष को मनाते हुए उनके द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 60 गुरुकुलों, विद्यालयों को सत्यार्थ प्रकाश की 20–20 प्रतियाँ छात्र/छात्राओं को निःशुल्क वितरित की गई तथा इस अवसर पर एक अखिल भारतीय भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 23 सितम्बर, 2023 को दोपहर भोजनोपरान्त इस प्रतियोगिता का आयोजन डॉ. कंवर सिंह व डॉ. कुलदीप आर्य नरेला के संयोजन में हुआ। इसमें 25 गुरुकुलों एवं विद्यालयों के छात्र/छात्राओं ने भाग लिया तथा छात्र/छात्राओं के वक्तृत्व कला का परीक्षण करने में सहयोग डॉ. रवीन्द्र कुमार संस्कृत प्रवक्ता लगवानदास संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार, डॉ. अजीत कुमार शास्त्री संस्कृत प्रवक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. विद्यानिधि संस्कृत प्रवक्ता वैंक्टेश्वर कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय साऊथ कैंपस ने निर्णायक की भूमिका को

निभाया।

सायंकालीन सत्र जिसका समय 8 बजे से रात्रि 10.30 बजे तक था, इसमें विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा 5 विद्वानों का अभिनन्दन किया गया जिनमें सर्वश्री आचार्य मनुदेव जी नैष्ठिक, आदिम गुरुकुल कुन्दुली उड़ीसा, डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा प्राचार्या कन्या गुरुकुल शिवगंज सिरोही, राजस्थान, आचार्य धनंजय जी गुरुकुल पौंधा, देहरादून, श्री महावीर शास्त्री महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, डॉ. वृजेश गौतम संस्कृत अध्यापक संघ दिल्ली, आचार्या सविता जी कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली, डॉ. राजवीर सिंह उपनिदेशक शिक्षा विभाग दिल्ली सरकार का अभिनन्दन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता आचार्य डॉ. विद्या प्रसाद जी मिश्र ने की तथा उनके कर–कमलों से सत्यार्थ प्रकाश प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं अखिल भारतीय भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं एवं प्रतिभागियों को लगभग 3 लाख 75 हजार रुपये का पुरस्कार वितरित किया गया।

इस शुभ अवसर पर डॉ. सूर्या देवी जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए आधुनिक युग में इसे आवश्यक बताते हुए मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा इस प्रणाली के लिए सहयोग को उत्तम कार्य की संज्ञा दी।

गुरुकुल गौतमनगर के स्नातक डॉ. राजवीर सिंह उपनिदेशक शिक्षा विभाग दिल्ली सरकार ने अपने शिक्षणकाल के अनुभवों को साझा करते हुए छात्र/छात्राओं को प्रेरित किया तथा मानव सेवा प्रतिष्ठान का इस कार्य को करने के लिए आभार व्यक्त किया।

सम्मानित विद्वान्, विदुषियों ने मानव सेवा प्रतिष्ठान का अपने वक्तव्यों के द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया।

आर्य जगत् के विद्वान् डॉ. विद्या प्रसाद मिश्र ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में इस समारोह की प्रशंसा करते हुए छात्र/छात्राओं को अपना आशीर्वाद दिया तथा मानव सेवा प्रतिष्ठान का सदैव सहयोग करने का आश्वासन दिया।

सायंकालीन सत्र के इस आयोजन संयोजन करते हुए मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान चन्द्रदेव शास्त्री एवं उपप्रधान श्री हरवीर शास्त्री ने सभी आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया।

दिनांक 24 सितम्बर, 2023 को प्रातः ब्रह्म यज्ञ एवं देव यज्ञ के पश्चात् प्रातःराश करने के उपरान्त 10 बजे मुख्य कार्यक्रम छात्रवृत्ति वितरण सम्मान व अभिनन्दन तथा मानव सेवा प्रतिष्ठान के 25 वर्षीय कार्यक्रमों की विवरण वाली एक स्मारिका का विमोचन तथा छात्र/छात्राओं को पुरस्कृत करने के कार्यक्रमों के साथ शुभारम्भ हुआ। इस सत्र का उद्घाटन अमेरिका से पधारे डॉ. अमरजीत शास्त्री धर्माचार्य आर्य समाज हिलसाइड न्यूयार्क, अमेरिका द्वारा किया गया।

डॉ. अमरजीत शास्त्री जी ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकर्ताओं को बधाई देते हुए पुरस्कृत छात्र/छात्राओं को प्रेरणाप्रद उद्बोधन दिया। विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की, वैदिक कन्यागुरुकुल ऐंचरा कलां, गुरुकुल मंझावली, विश्व भारती गुरुकुल लाढ़ौत, कन्या गुरुकुल नजीबाबाद, कन्या गुरुकुल लोवा कलां, कन्या गुरुकुल नरेला आदि के छात्र–छात्राओं ने अपने समूहगान के द्वारा कार्यक्रम को सुशोभित किया। नीदरलैण्ड (हालैण्ड से आई मान्या बहन कीर्ति अवतार तथा अमेरिका से पधारे श्री चन्द्रभान आर्य जी ने अपने प्रवचन व सान्निध्य से अपना आशीर्वाद प्रदान किया। श्री आजाद सिंह लाकड़ा प्रधान, चौ. छोटू एजुकेशन सोसायटी, श्री रामवीर शास्त्री प्रधान स्नातक मण्डल गुरुकुल झज्जर, श्री रणवीर सिंह शास्त्री बवाना, श्री नरजीत सिंह सिकारा केशवपुरम, आचार्य चन्द्रशेखर जी सम्पादक अध्यात्म पथ पत्रिका दिल्ली, आचार्य प्रमोद कुमार शास्त्री कन्या गुरुकुल दबथला, श्री शिव कुमार मदान आर्य समाज जनकपुरी, श्री सुखवीर सिंह पूर्व प्रिंसिपल झज्जर, मा. राम कुमार जी सांपला, श्री ओम प्रकाश सांगवान, श्री दयानन्द जी देशवाल खेड़का झज्जर आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने अपने उद्बोधन एवं अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई, पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी सुखानन्द जी, स्वामी आदित्यवेश जी व पद्मश्री डॉ. सुकामा जी के कर–कमलों से 25 संस्थाओं के सैकड़ों छात्र/छात्राओं को 4 लाख 50000/– रुपये की छात्रवृत्ति वितरित की गई। उपस्थित विद्वान्, विदुषियों के द्वारा सत्यार्थ प्रकाश प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता प्रमाण पत्र व पुरस्कार वितरित किये गये।

डॉ. अमरजीत जी व स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी साध्वी माता उत्तमा यति जी द्वारा स्मारिका का विमोचन किया गया।

अभिनन्दन के कार्यक्रम में निम्नलिखित 20 विद्वान्, विदुषी, आचार्य, आचार्याओं व सामाजिक कार्यकर्ताओं को अभिनन्दित किया गया उनके नाम उल्लेखनीय हैं सर्वश्री स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी आर्यवेश जी, माता उत्तमायति, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी सुखानन्द सरस्वती जी, डॉ. सुकामा, डॉ. सूर्या देवी, डॉ. सुमेधा, डॉ. राजनमान, नैष्ठिक मनुदेव, आचार्या सविता आर्या, श्री योगेन्द्र याज्ञिक, श्रीमती कल्पना आर्या, श्री सत्यवीर आर्य, आचार्य जयकुमार, श्री सुनील कुमार शास्त्री, श्री हरिकिशन वेदालंकार, श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री, आचार्य धनंजय, ब्र. राजदेव नैष्ठिक, डॉ. बलवीर आचार्य, श्री राजेन्द्र सिंह आर्य, श्रीमती सोनिया, डॉ. ब्रजेश गौतम तथा श्री महावीर शास्त्री। सम्मानित विद्वानों में माता साध्वी उत्तमायति जी, स्वामी सुखानन्द जी महाराज, स्वामी आदित्यवेश जी, योगेन्द्र याज्ञिक जी, पद्मश्री डॉ. सुकामा जी, डॉ. कल्पना आर्या जी, श्री सत्यवीर आर्य जी व श्री

हरिकिशन वेदालंकार हैदराबाद आदि ने अपने–अपने वक्तव्यों में मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यक्रमों की प्रशंसा करते हुए सभी सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

रजत जयन्ती के सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता करने वाले पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने अपने आर्शीवचनों से मानवसेवा प्रतिष्ठान के एक–एक सदस्य को व्यक्तिगत रूप से नाम लेकर सम्बोधित करते हुए अपना आशीर्वाद दिया।

कार्यक्रम के समापन पर आर्य जगत् के वीतराग संन्यासी पूज्य स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा किये गये कार्यों की चर्चा करते हुए सभी को साधुवाद व आशीर्वाद प्रदान किया। स्वामी जी ने अपने उद्बोधन में संस्था द्वारा किये जा रहे कार्यों की चर्चा करते हुए इसे महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक कार्य बताया।

अन्त में मानव सेवा प्रतिष्ठान के संस्थापक श्री रामपाल शास्त्री जी द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया गया। उसके पश्चात् शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अन्त में सभी लोगों में ऋषि लंगर में प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

श्राद्ध तर्पण का वास्तविक स्वरूप : श्राद्ध पितरों या मृतकों का?

– स्वामी केवलानन्द सरस्वती

जिस कर्म से विद्वान, देव ऋषि, माता-पिता सुखी हों उनकी तृप्ति हो तथा उनके लिये जो कर्म, सेवा श्रद्धा से किये जायें उस कर्म को तर्पण और श्राद्ध कहते हैं। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपनी पंच महायज्ञ विधि पुस्तक में इन पंच यज्ञों का फल लिखा है- आत्मोन्नति और आरोग्यता होने से शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थ कार्यों की सिद्धि होती है तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं। यह कितना बड़ा फल है, इन पंच महायज्ञों के करने का! अर्थात् इन पंच यज्ञों के करने से मनुष्य जीवन सफल होता है।

इसलिए मनु महाराज ने कहा 'यथाशक्तिर्नहापयेत्' अर्थात् प्रत्येक मनुष्य इस यज्ञ को अवश्य ही करे। इनको न करने से मनुष्य पाप का भागी होता है। ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, नृयज्ञ इन यज्ञों में तीसरा यज्ञ पितृयज्ञ है। इसी का नाम श्राद्ध है।

विद्वानों तथा जीवित माता पिता की श्रद्धा से जो सेवा की जाती है उसे श्राद्ध कहते हैं। बहुत से लोग मोह तथा अज्ञानवश मृत माता पिता का श्राद्ध करते हैं जो सर्वथा बुद्धि विरुद्ध है, क्योंकि मरने पर जीव अपने कर्मानुसार पता नहीं कहां किस योनि में जन्म लेता है। यहां किसी को खिलाया गया भोजन या दी गई वस्तु कैसे मिल सकती है? वह जीव हाथी, घोड़ा, शेर, सांप, चींटी पता नहीं किस योनि में गया है।

इसलिए मरने पर बड़ों के नाम से श्राद्ध करना व्यर्थ तथा बहुत बड़ी भूल और अज्ञान का कार्य है। जीवित माता-पिता की सेवा श्रद्धा भक्ति से की जाये यही सच्चा श्राद्ध है। माता-पिता की सेवा से यश और पुण्य दोनों प्राप्त होते हैं। माता-पिता को सेवा से संतुष्ट करना जीवन की एक बहुत बड़ी सफलता है, पुण्य है। मरने पर उनका आशीर्वाद सन्तानों को नहीं प्राप्त हो सकता। जीवित माता-पिता ही सेवा से सन्तुष्ट होकर अपने आशीर्वाद के साथ अपना सर्वस्व सन्तान को दे जाते हैं, इसलिए जीवित माता-पिता की सेवा ही सच्चा श्राद्ध है। जिन लोगों ने जीवित माता-पिता की आज्ञा का पालन किया तथा उनकी सेवा की उनका नाम हजारों वर्ष बीतने पर भी लोग नहीं भूलते।

वर्तमान में अपने हिन्दू समाज में अनेक भ्रान्त प्रथाएं प्रचलित हैं। उनमें मृतकों का श्राद्ध भी एक बहुत ही विचित्र तथा भ्रान्तिपूर्ण प्रथा प्रारम्भ हो गयी हैं। वास्तविक श्राद्ध व पितर शब्दों के अर्थ के अनर्थ करके पौराणिक पंडितों ने इसे अपनी जीविका का साधन बना रखा है। अब हमें यह देखना है कि श्राद्ध तर्पण पितरों का करना है या मृतकों का? वास्तव में शास्त्र मर्यादा का पालन करना प्रत्येक मानव का धर्म है।

वेदों में पितरों का श्राद्ध व तर्पण,

ओ३म्! उजं वहन्ती अमृतं धृतं पयःकीलालं परिस्रुतम्।

स्वाधास्य तर्पयत में पितॄन्।। यजु. 2/34

अर्थ- (पितॄन) पितरों को अर्थात् उच्चकोटि के विद्वानों व सत्योपदेशकों को (तर्पयत) प्रसन्न तृप्त करो। किन-किन पदार्थों से (ऊर्जं वहन्ती अमृतं घृतम) दूध, उत्तमान्न, ऋतु के ताजा फलआदि देकर स्वधास्य अपनी पवित्र कमाई से ही उनकी सेवा करो और धर्मानुकूल अर्थ के उपार्जन में दृढ़ रहो।

भावार्थ : इस उपरोक्त वेद मन्त्र के अर्थ पर हम ध्यान दें तो पालन व रक्षा करने वालों का नाम पितर है, अर्थात् माता पिता, गुरु आचार्य, विद्वान् आदि पूजनीय महाजनों की अपनी पवित्र कमाई से सदा सेवा करनी चाहिए उत्तमोत्तम पदार्थों से सदा उनकी तृप्ति करो इसी का नाम 'तर्पण' है और श्रद्धा से सेवा करना ही 'श्राद्ध' है। यह जान लेना आवश्यक है कि एक सेव्य, जिसकी सेवा करनी है और दूसरा सेवक जिसे सेवा करनी है, वह दोनों ही वर्तमान में हों तभी सेवा सम्भव है।

अतः श्राद्ध व तर्पण का सम्बन्ध जीवित पितरों से ही हो सकता है, मृतकों से इसका सम्बन्ध नहीं हो सकता। इसलिए मन, वचन, कर्म से जीवित पितरों को सुख देते रहो। जैसे हमारे पितर जन अपनी सत्य शिक्षा देकर हमारा कल्याण करते हैं उसी प्रकार उनकी सेवा करना हमारा कर्त्तव्य है।

आजकल अविद्या, अन्धकार के कारण लोग श्राद्ध का स्वरूप ही भूल गये और माता-पिता के मर जाने पर उनको पानी देकर तर्पण और पिण्डदान तथा ब्राह्मण को भोजन कराकर श्राद्ध करते हैं। प्रायः देखा जाता है कि लोग देवता स्वरूप जीवित माता पिता की सेवा में तो उपेक्षा करते हैं और मरने पर गंगाजी में पहुंचाने को ही तर्पण व श्राद्ध मानते हैं। इसी पर किसी अनुभवी कवि ने ठीक ही कहा है:

जियत मात-पिता से दंगम दंगा।

मरे मात पिता पहुंचाये गंगा।।

अब! आप ही विचार करें। इससे क्या लाभ? क्योंकि प्रत्येक प्राणी अपने-अपने कर्मानुसार मरने पर उत्तम, मध्यम, निकृष्ट योनि में जन्म लेता है जिसको उसी प्रकार का भोजन भगवान् अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार उपलब्ध कराता है। इसलिए अपने पितरों की आत्मा को शान्त व तृप्त करना चाहते हो तो अपने जीवित माता-पिता व गुरुजनों की श्रद्धा से सेवा करके उन्हें तृप्त करो। यह वास्तव में सच्चा व प्रत्यक्ष श्राद्ध व तर्पण है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने श्राद्ध और तर्पण शब्द पर अपने अमर ग्रन्थ जगद्विख्यात सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में बहुत ही सुन्दर प्रकाश डाला है।

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं व सर्वदा।

नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्तिर्न हापयेत।।

मनु. 3/70

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञश्च तर्पणम्।

होमो दैवो बलिर्भूतो नृपयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।

मनु. 3/70

महर्षि लिखते हैं- दो यज्ञ, ब्रह्मचर्य में लिख आए। वे अर्थात् एक, वेदादि शास्त्रों का पढ़ना, पढ़ाना, सन्ध्योपासना, योगाभ्यास, दूसरा, देवयज्ञ विद्वानों का संग, पवित्रता, दिव्य गुणों का धारण, दातृत्व, विद्या की उन्नति करना है ये दोनों यज्ञ प्रातः सायं करने होते हैं।

तीसरा पितृयज्ञ अर्थात् जिसमें देव विद्वान् ऋषि पढ़ाने वाले पितर, माता पिता आदि वृद्ध ज्ञानी और परम योगियों की सेवा करनी चाहिए। पितृयज्ञ के दो भेद हैं- एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। श्राद्ध अर्थात् 'श्रत' सत्य का नाम है। श्रत्सत्यं दधाति यथा क्रियथा सा श्रद्धा, श्रद्धया सत् क्रियते तच्छ्राद्धम। जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाए उसका नाम श्राद्ध है और 'तृप्यान्ति तर्पयन्ति येन पितृन तत्तर्पणम्' जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किए जाये उसका नाम तर्पण है। परन्तु यह जीवितों के लिए है, मृतकों के लिए नहीं। महर्षि की यह शिक्षा यदि हम अपने आचार विचार व व्यवहार में लायें तो हम सबका जीवन सुखी बन जाए।

पंच महायज्ञों में पितृयज्ञ :- प्रत्येक ब्रह्मचारी व गृहस्थ का परम कर्त्तव्य है कि जीवित माता-पिता, दादा-दादी एवं आचार्य, गुरुजनों आदि अपने बड़ों की नित्य श्रद्धा पूर्वक भक्तिभावना से सेवा करें। जिन माता-पिता ने अनेक प्रकार से कष्ट उठा कर हमारा पालन पोषण किया उनके ऋण से उऋण होना तो असम्भव है। जो लोग अपने इस कार्य में प्रमाद आलस्य करते हैं, वे निश्चय ही नरकगामी होते हैं, अतः प्रत्येक गृहस्थ का परम कर्त्तव्य है कि वह अपने अपने जीवित माता पिता व गुरुजनों को अपनी आत्मिक श्रद्धा द्वारा सेवा कर उन्हें तृप्त करें। इसी को नीतिकारों ने श्राद्ध कहा है और अत्यन्त श्रद्धापूर्वक सेवा करने को ही तर्पण कहा है।

प्रायः देखा जाता है कि अविद्या अन्धकार के कारण लोग श्राद्ध तर्पण का अर्थ ही भूल गए हैं, और माता पिता के मरने पर उनकी हड्डियों को हरिद्वार, पुष्कर, गया आदि कल्पित तीर्थ स्थानों पर जाकर पानी तर्पण और पिण्डदान तथा नामधारी ब्राह्मणों को भोजन करा कर श्राद्ध करते हैं परन्तु यह सब व्यर्थ है, क्योंकि जीवात्मा यह भौतिक शरीर छोड़ने पर अपने कर्मानुसार दूसरी योनि धारण कर लेता है, इस प्रकार के तर्पण व श्राद्ध से उन्हें कोई लाभ नहीं पहुंच सकता है। न्यायकारी परमात्मा उसकी योनि के अनुसार ही भोजन की व्यवस्था करता है।

सच्चा तर्पण व श्राद्ध तो यही है कि जीवित माता पिता की नित्य श्रद्धा व भक्ति भाव से सेवा की जाये और उनकी आत्मा को हर प्रकार से तृप्त रखा जावे। यही पितृ यज्ञ है। जो परिवार ऐसा करते हैं, उनकी प्रत्येक कामना भगवान पूर्ण करता है।

श्रद्धा पूर्वक अभिनन्दन का फल :-

अभिवादनशीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्या यशो बलम्।।

यह है वास्तविक जीवित पितरों की सेवा भक्ति तथा श्रद्धा पूर्वक अभिनन्दन (नमस्ते) करने का सुन्दर फल। हमारे विद्वान् पितर, आचार माता पिता को आगे होकर चरण स्पर्श अभिवादन करने पर हमें क्या आशीर्वाद देते हैं, इस पर ध्यान दें। प्रथम आयु, विद्या यश, बल इन महाशक्तियों के द्वारा मानव इस संसार सागर के अज्ञान रूपी भंवर से तर जाते हैं। इसलिए इसका नाम वास्तविक तीर्थ है। संत महात्माओं का सत्संग व उपदेश ही भवसागर से तारने वाली नौका है। न की किसी कल्पित तीर्थ स्थानों में स्नान करने से प्राणी तरता है।

अद्भिर्गात्राणि शुद्धन्ति, मनः सत्येन शुध्यति।

विद्यातपोभ्याम् भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यन्ति।।

मनुष्य का वाह्य शरीर जल से शुद्ध होता है। मन सत्य उपदेश से शुद्ध होता है, विद्या और तप से आत्मा शुद्ध होती है। बुद्धि सत्य ज्ञान से शुद्ध होती है।

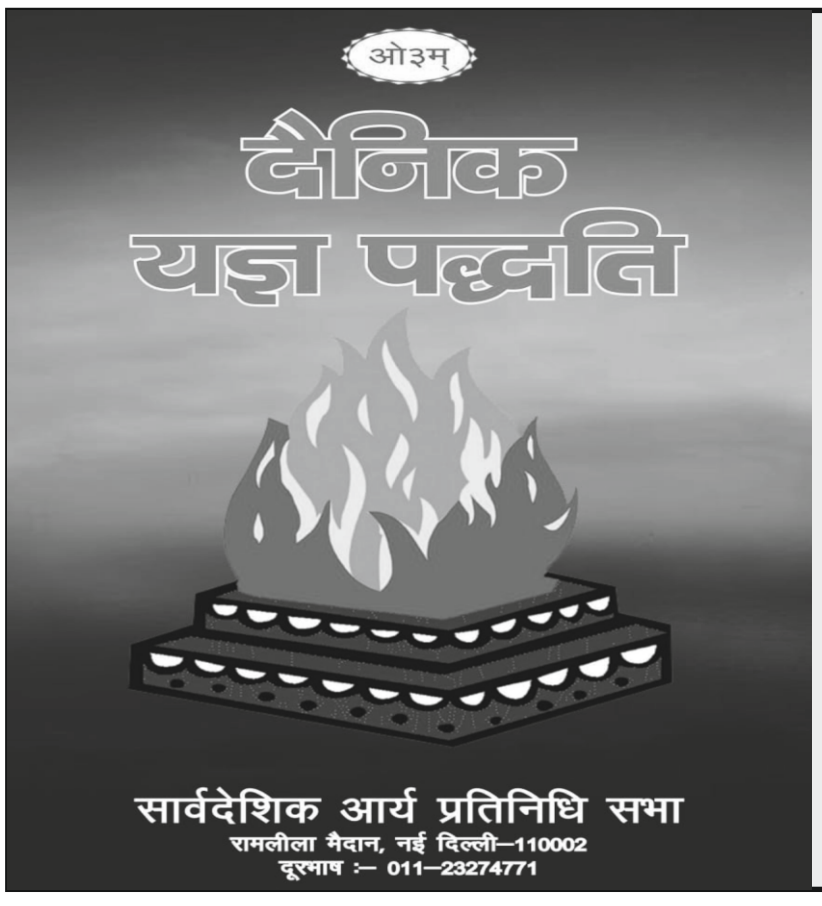

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

युवाशक्ति : आह्वान तथा निर्माण योजना

– डॉ. जगदीश शास्त्री

यू मिश्रणामिश्राणे धातु से 'युवा' शब्द निष्पन्न होता है जिसका अभिप्राय है कि युवा में मिश्रण और अमिश्रण जोड़ने और तोड़ने, निर्माण और विध्वंस की सारी शक्तियां निहित हैं। अर्थात् युवा 'शक्ति' का पर्याय है। शक्ति जो अदम्य है, अकुण्ठ है। कुछ करने के आनन्दमय उत्साह से भरी है। कुछ नया, कुछ बेजोड़, कुछ अलग करने की चाहत से परिपूर्ण है। जो चाहे इस शक्ति को अपना ले, अपने पक्ष में कर ले और जैसा चाहे इनसे काम करा ले। जिधर चाहे इन्हें ले जाए। युवा 'शक्ति' है जिसे नेतृत्व की आवश्यकता है। कुशल मार्गदर्शक की आवश्यकता है। युवा शक्ति का सही उपयोग करने वाले की आवश्यकता है। आज के नेता, आज के गुरु, आज के अभिभावक, माता और पिता युवा शक्ति का नेतृत्व नहीं कर रहे हैं। उन्हें मार्गदर्शन नहीं कर रहे। उन्हें अपने ढंग से, अपने रास्ते पर चलने के लिए छोड़ दिया गया है। युवा शक्ति स्वयं निर्णय लेने में बुद्धि की जगह मन की बात अधिक मानता है। अतएव अच्छाइयों से अधिक बुराईयों की ओर झुकता है। पूरे राष्ट्र और समाज के लिए सोचने की जगह वह व्यक्तिवादी स्वार्थी बन जाता है। अतः आवश्यकता है कि युवा की शक्ति और वृद्ध का अनुभव मिलकर काम करें। क्योंकि युवा शक्ति का पर्याय है तो प्रौढ़ ज्ञान व लम्बे अनुभव का। युवा के पास बहुमूल्य शक्ति है तो वृद्ध के पास अमूल्य अनुभव है। शक्ति से हम आगे पीछे चल सकते हैं पर चलने की दिशा कौन सी हो यह शक्ति नहीं बता सकती। क्योंकि शक्ति अंधी है, नेत्रहीन है। और नेत्रहीन का बिना देखे चलना व्यर्थ है तथा विध्वंसक भी। इसके विपरीत अमूल्य ज्ञान व अनुभव से हम भूत-भविष्य, हित-अहित सब कुछ जान जाते हैं, चलने की दिशा का ज्ञान हो जाता है। पर चलने के लिए पैर नहीं है, पैरों में शक्ति नहीं है; क्योंकि ज्ञान व अनुभव स्वयं लंगड़ा है। अतः लंगड़े का ज्ञान नपुंसक है, अकिंचित्कर है। निष्कर्ष यह निकला कि अकेला ज्ञान और अकेली शक्ति दोनों अधूरे हैं। एक अंधा है, दूसरा लंगड़ा। एक के पास पैर हैं, आंख नहीं। दूसरे के पास आंख है, पैर नहीं। एक के पास अपार अनुभव का भण्डार है पर शक्ति नहीं है; दूसरे के पास विपुल शक्ति है पर अनुभव नहीं है। अतः ये अकेले कुछ नहीं कर सकते। कुछ करने के लिए आवश्यकता है दोनों के सहयोग की, संगठन की; दोनों के मिलकर काम करने की। अंधा लंगड़े को अपने कंधे पर बिठा ले, लंगड़ा रास्ता दिखाता जाए और अंधा चलता जाए। अर्थात् युवा वृद्धों का सम्मान करें, उनसे मार्गदर्शन लें और वृद्ध युवाशक्ति का उपयोग करें। पर इस सहयोग, संगठन और परस्पर मेल की पहल दो में से किसी एक को करना होगा।

समय से प्रयास- आर्य समाज के संदर्भ में युवा शक्ति की बात करें तो आज प्रायः आर्य समाजों में युवक-युवतियों का अभाव है। आर्य समाज मात्र वृद्धों का समाज बन चुका है। वृद्ध धीरे-धीरे काल कवलित होते जा रहे हैं तथा उनके परिवार का कोई प्रतिनिधि समाज से नहीं जुड़ रहा है। इस प्रकार नए सदस्यों के अभाव में आर्य समाज क्षीण होता जा रहा है। आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के लोग प्रायः यह सुनाते मिल जाते हैं कि हमारे माता पिता पक्के आर्य समाजी थे, हम सब जब तक सन्ध्या नहीं कर लेते, हमें खाना नहीं मिलता था। वे हमें आर्य समाज के सत्संगों में बचपन से ही ले जाया करते थे। ... समाज के सत्संगों को सुनते-सुनते हम भी पक्के समाजी बन गए। ... इत्यादि। पर यही समाजी अपने बच्चों, पौत्र-पौत्रियों को समाज में नहीं लाते और झूठ ही उन्हें कोसते हैं। अपने माता-पिता की तरह इन्होंने भी अपने बच्चों को बचपन से ही समाज में लाने की आदत क्यों नहीं डाली? ऐसा पूछने पर वे स्वयं ही अनेक बहाने बनाते हैं तथा इसके लिए नई पीढ़ी को ही दोषी मानते हैं। पर वस्तुतः नई पीढ़ी के प्रति दोषारोपण अनुचित है। इसके लिए पूर्ण उत्तरदायी पुरानी पीढ़ी है। जिन माता पिता ने बचपन और किशोर अवस्था से ही बच्चों को समाज और सत्संग के प्रति रुचि उत्पन्न नहीं की, और युवा होने पर उन्हें एकाएक समाज में रुचि लेता हुआ देखने की कामना करते हैं। यह उस किसान की तरह मूर्खतापूर्ण है जो समय पर बीज बोये बिना ही फसल काटने की कामना करता है। अतः यदि युवा पीढ़ी को सामाजिक कार्यों में रुचि लेता हुआ देखना चाहते हैं तो एक अच्छे किसान की तरह उनमें बचपन से ही संस्कारों के बीज बोयें, प्रशिक्षित करें। और यदि बाल्यावस्था में बच्चे आपकी बात नहीं मानते तो निम्न नीति का प्रयोग करः-

लालयेत् पंचवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्।।

अर्थात् पांच वर्ष तक बच्चों को प्यार से लोभ लालच देकर अच्छे कार्यों में लगाते रहना चाहिए, किशोर अवस्था में जब बच्चे अनुचित बातों की हठ करने लगें तो कठोरतापूर्वक बर्ताव करें, आवश्यकतानुसार दण्ड देकर भी बच्चों को बुरे आचरण से हटाना और शुभ कार्य में लगाना चाहिए; और जब संतान युवा हो जाए तो उनसे मित्रवत् संवाद के माध्यम से समझाकर मार्गदर्शन करना चाहिए। तात्पर्य यह कि बच्चों के निर्माण में समय पर, अवस्थानुसार निरन्तर लगे रहना चाहिए। जैसा कि हमारे पूर्वजों ने हमारे साथ किया और जिस प्रकार बच्चों की स्कूली शिक्षा के प्रति आज हम भी सदैव सजग और तैनात रहते हैं, उसी प्रकार उन्हें सामाजिक, नैतिक व धार्मिक शिक्षा देने के प्रति भी, आर्य समाज में रुचि पैदा करने के प्रति भी तत्पर रहें। बाल्य और किशोर अवस्था का अभ्यास ही युवा अवस्था में झुकाव और लगाव लाएगा। युवकों को सहसा समाज में लाना बहुत कठिन है।

सामाजिकता की शिक्षाः- आज अर्थ और काम प्रधान भोगवादी समय में युवा स्वार्थी और व्यक्तिवादी हो गया है। उसकी सोच आत्मकेन्द्रित हो गई है। उसकी सोच में मात्र अपना हित निहित हो गया है। सारी दुनियां से वह केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। दुनियां को मात्र अपनी कामनाओं और इच्छाओं की पूर्ति के साधन के रूप में देख रहा है और उपयोग भी कर रहा है। वह स्वयं किसी दूसरे का हितसाधक नहीं बनना चाहता। वह स्वयं किसी दूसरे की कामना और इच्छापूर्ति का साधन नहीं बनना चाहता। उसकी सोच में न समाज है न राष्ट्र, न देश न दुनियां। यहां तक कि अपने परिवार को भी वह मात्र अपने लिए उपयोग करना चाहता है। अपनी सुख-सुविधाओं को परिवार के बीच भी नहीं बांटना चाहता। अपनी उन्नति और प्रगति का भागीदार किसी को नहीं बनाना चाहता, जिसके परिणामस्वरूप एकल परिवार 'न्यूक्लीयर फैमिली' की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अविवाहित रहने एवं विवाह करके भी निःसंतान रहकर स्वच्छंद भोग करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इन सबका उत्तरदायी आज का प्रचार माध्यम, शिक्षापद्धति और स्वयं माता-पिता तथा आचार्य है। इसमें सुधार के लिए भी किशोर अवस्था से ही प्रयास करना होगा। बच्चों को सामाजिकता की शिक्षा देनी होगी। बचपन से ही बताना होगा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। हम समाज का एक अभिन्न हिस्सा हैं। आज हम जो कुछ भी हैं, समाज के द्वारा हैं। समाज के प्रतिबिम्ब और समाज के प्रतिनिधि हैं। हम समाज से हैं और समाज हमसे है। हमारी वर्तमान अवस्था प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से समाज की ही देन है। समाज के बिना हमारा जीवन संभव नहीं है। अतः समाज के प्रति हमारा कर्त्तव्य है कि हम स्वयं एक आदर्श मनुष्य बनकर आदर्श समाज का निर्माण करें। उन्नत और श्रेष्ठ समाज के निर्माण में अपना योगदान दें। समाज से लेना और समाज को देना भी सीखें। इसके लिए माता-पिता, बच्चों, किशोरों को समाज में लेकर जाएं, समाज के नियम सिद्धान्तों, आचार विचारों से भलीभांति परिचित करावें। किशारों को सामाजिक मर्यादाओं का पालन करना सिखाएं। समाज के सभी सामूहिक, सामुदायिक गतिविधियों में बच्चों को सम्मिलित करें। पर्व त्यौहार एवं उत्सवों में किशोरों को साथ ले जाएं। समाज के सेवा कार्यों का उन्हें भी भागीदार बनावें। दूसरों की सेवा करके संतुष्ट एवं प्रसन्न होना सिखाएं। सबकी उन्नति में ही अपनी सच्ची उन्नति समझना सिखाएं। समाज के साथ अपनापन पैदा करें। समाज का हित-अहित अपना हित-अहित है, समाज का सुख-दुःख अपना सुख-दुःख है ऐसी अनुभूति विकसित करें। इससे समाज के प्रति रुचि और प्रेम स्वतः पैदा होगा। समाज के प्रेमी यही बालक और किशोर आगे चलकर समाज को समाज प्रेमी युवक के रूप में मिलेंगे। समाज रूपी रथ की बागडोर संभालेंगे।

सामाजिक उत्तरदायित्व सौंपेंः- युवा बलवान् है, ऊर्जावान् है। ऊर्जस्वी एवं तेजस्वी है। उसका स्वभाव गति है, कर्म है, कुछ कर दिखाना है। कुछ युवकों को मात्र सत्संग में बैठकर चले जाना आकर्षक नहीं लगता, नीरस लगता है। उनमें सत्संग सुनकर अपने और समाज के लिए कुछ करने की उमंग पैदा होती है। उनके उमंग और उत्साह को बढ़ाना चाहिए। उन्हें करने का कुछ कर दिखाने का अवसर देना चाहिए। उन्हें उत्तरदायित्व सौंपना चाहिए। युवकों को समाज के विभिन्न सेवा कार्यों का, विभागों का उत्तरदायित्व सौंपने, अधीनस्थ अधिकारी बनाकर प्रशिक्षित करने तथा शीर्ष नेतृत्व सौंपने से समाज के कार्यों को गति मिलेगी तथा समाज में युवक-युवतियों की संख्या भी बढ़ेगी। क्योंकि मनुष्य अपने समान आयु वाले से आकर्षित होता है तथा समान आयु वालों को आकर्षित करता है। स्त्रियां स्त्रियों से, पुरुष-पुरुष से, वृद्ध-वृद्ध से तथा युवक-युवक से आकर्षित होते हैं। क्योंकि मनुष्य समान आयु वालों को अपने सबसे अनुकूल पाता है। समवयस्क, समउम्र के साथ सहज और सुखद अनुभव करता है। अतः वर्तमान नई पीढ़ी को, युवक-युवतियों को समाज में आकर्षित करने के लिए योग्य युवकों को पदाधिकारी बनाकर उत्तरदायित्व सौंपना चाहिए। इसके अलावा युवकों को आकर्षित करने वाली अन्य गतिविधियों जैसे-शारीरिक शिक्षण, नैतिक शिक्षण, योग साधना, चरित्र निर्माण, सिद्धान्त परिचय इत्यादि शिविरों का आयोजन करना चाहिए। आर्य समाज के सदस्यों के घर जो युवक-युवती हैं उन पर विशेष ध्यान देना होगा। उनके लिए लेखन, भाषण, गायन, वादन, नाट्यम, प्रश्नोत्तर, वाद-विवाद संगोष्ठी, परिचर्चा आदि विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने होंगे। इनमें भाग लेने वाले इन्हीं युवकों को समाज का सक्रिय सदस्य बनना चाहिए क्योंकि सदस्यता समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को जगाती और बढ़ाती है।

नव दम्पति पर ध्यान केन्द्रणः- नव-विवाहित जोड़ा स्वयं युवक-युवती होते हैं तथा इन्हीं की नन्हीं-नन्हीं संतान भी होती है जिनका इन्हें निर्माण करना होता है। यही समाज की भावी पीढ़ी के निर्माता भी होते हैं। अतः जो समाज के सदस्य हैं जिनके बहू बेटे हैं, वे, समाज के अधिकारी और पुरोहित तीनों मिलकर नवदम्पती के सामाजिकीकरण और वैदिकीकरण की योजना चलाएं। इस योजना के अन्तर्गत विवाह संस्कार के समय से ही नवदम्पती में परिवर्तनकारी ऐसा वातावरण बनाएं, ऐसी प्रभावकारी शिक्षा और संस्कार दें, इन्हें सनातन वैदिक परिवार व आर्य समाज से जुड़े होने के महत्व का ज्ञान कराएं, आत्मगौरव एवं आत्मसम्मान पैदा करें कि जिससे इनमें आर्य समाज के प्रति प्रेम और लगाव पैदा हो जाए। विवाह के प्रथम दिन से ही पति द्वारा, सास-ससुर द्वारा, पुरोहित एवं समाज के अधिकारी द्वारा यह विशेष आभास कराया जाए कि आज उनके जीवन का इसलिए भी विशेष दिन है कि आज उनका पारिवारिक और सामाजिक जीवन में प्रवेश हो रहा है; सत्य सनातन वैदिक ईश्वरीय धर्म में दीक्षित होने जा रहे हैं। अतः समस्त अंधविश्वासों को त्यागकर आज से वैदिक जीवन पद्धति की शुरुआत करें। आर्य समाज के पुरोहित और अधिकारियों की उपस्थिति में नवदम्पति को वैदिक साहित्य, यज्ञपात्रादि भेंट किया जाए। इसी दिन से उन्हें आार्य समाज में दीक्षित करने का प्रयास किया जाए। नवदम्पती को विशेषरूप से समाज के यज्ञ का यजमान बनाया जाए। समाज में बुलाकर उन्हें समाज के सदस्यों से परिचय कराया जाए। समाज का सदस्य बनाकर इसकी सार्वजनिक घोषणा की जाए। भरी सभा में पुराने सदस्यों से परिचित कराएं तथा फूलमाला पहनाकर सम्मानित करें। नवयुगल के माता पिता, समाज के पुरोहित और अधिकारी तीनों की सम्मिलित प्रेरणा एवं प्रयास से नवदम्पती की भावी संतान का समय-समय पर सभी संस्कार अवश्य आयोजित किए जाएं। कोई सदस्य यदि एक दो सप्ताह में अनुपस्थित रहता है तो समाज का पुरोहित, अधिकारी एवं सदस्य उसकी सुध लेवें, उसके घर जाकर अनुपस्थिति के कारणों को जानें और आवश्यकता हो तो सहायता के लिए तत्पर रहें। सुख दुःख में साथ देने वाले समाज के प्रति स्वाभिवक रूप से प्रगाढ़ एवं अटूट सम्बन्ध स्थापित हो जायेगा। नवदंपती के रूप में युवक-युवति और साथ में बालक वृद्ध सभी समाज के प्रांगण में साथ-साथ होंगे। आर्य समाज रूपी उद्यान खिल उठेगा।

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् एवं मधुर प्रकाशन के संस्थापक

स्व. श्री राजपाल सिंह शास्त्री की पुण्यतिथि के अवसर पर विशेष यज्ञ एवं स्मृति सभा

दिनांक 30 सितम्बर, 2023 को आदर्शनगर, दिल्ली में हुआ सम्पन्न

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एवं विख्यात मधुर प्रकाशन के संस्थापक स्व. श्री राजपाल सिंह शास्त्री जी तथा उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती चन्द्रवती कौर की स्मृति में शास्त्री जी की पुण्यतिथि पर उनके सुयोग्य सुपुत्र श्री मधुर प्रकाश के आदर्शनगर, दिल्ली स्थित निवास पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम स्वामी आर्यवेश जी की गरिमामयि उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। यज्ञ में श्री मधुर प्रकाश जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नीतेश यजमान के रूप में विराजमान हुए और उनकी तीनों बहनें श्रीमती सरिता आर्या, श्रीमती

मधुबाला आर्या तथा श्रीमती सुमेधा आर्या विशेष रूप से सम्मिलित थीं। सभी ने मिलकर बड़ी श्रद्धा एवं भावना के साथ यज्ञ किया और अपने स्व. माता–पिता को स्मरण कर सादर श्रद्धांजलि समर्पित की।

यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने स्व. शास्त्री जी और स्वर्गीया पूज्या माता जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए सभी परिवारजनों को प्रेरित किया कि उनकी स्मृतियों को स्थाई बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि प्रतिवर्ष हम इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करें जिसमें हम उन्हें अपने श्रद्धा पुष्प अर्पित कर सकें।

कन्या गुरुकुल, राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली में नव–निर्मित भवन का लोकार्पण समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, प्रसिद्ध दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह जी, एमेटि शिक्षण संस्थान के डायरेक्टर श्री आनन्द चौहान जी, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, आर्य समाज मुल्ताननगर के प्रधान श्री राज कुमार आर्य जी, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री आदि अनेक गणमान्य आर्य नेताओं एवं प्रतिष्ठित महानुभावों ने भाग लिया

आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित किया

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की अध्यक्ष, आर्य महिला सभा दिल्ली की प्रधाना और कन्या गुरुकुल राजेन्द्रनगर दिल्ली की संचालन साध्वी उत्तमा यति के संरक्षण में कन्या गुरुकुल राजेन्द्रनगर, दिल्ली में नव–निर्मित भवन का लोकार्पण समारोह 16 सितम्बर, 2023 को विशाल स्तर पर आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रातः यज्ञ का सुन्दर आयोजन हुआ जिसमें ब्रह्मा पद को आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने सुशोभित किया। यज्ञ के उपरान्त लोकार्पण समारोह का विधिवत कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ और स्वामी आर्यवेश जी तथा ठाकुर विक्रम सिंह जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त ठाकुर विक्रम सिंह जी, श्री आनन्द चौहान जी एवं श्रीमती मृदुला चौहान जी, श्री अनिल आर्य, श्री जितेन्द्र भाटिया, श्रीमती प्रवीण आर्या, श्री राजकुमार आर्य, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री आदि आर्य नेताओं एवं विद्वानों के अतिरिक्त स्थानीय विधायक ने भी कार्यक्रम में सम्मिलित होकर गुरुकुल की उन्नति एवं प्रगति की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

स्वामी आर्यवेश जी ने साध्वी उत्तमा यति को आश्वस्त किया कि आप कन्या गुरुकुल तथा आर्य महिला सभा दिल्ली का कुशल नेतृत्व कर रही हैं, हमारा सहयोग आपके साथ रहेगा।

ठाकुर विक्रम सिंह जी ने गुरुकुल के लिए एक लाख रुपये की राशि दान स्वरूप घोषित की। कार्यक्रम में कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने भी अपने प्रोग्राम प्रस्तुत किये। नये भवन का निर्माण अपने दान से करने वाले परिवार के सभी सदस्य इस अवसर पर उपस्थित थे जिनका स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया। साध्वी उत्तमा यति ने सभी आगन्तुक महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद किया।

आर्य समाज शक्तिनगर, दिल्ली में एक दिवसीय आर्य सम्मेलन का कार्यक्रम उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ सम्पन्न

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ तथा स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन का हुआ आयोजन

देश की प्रसिद्ध आर्य समाज शक्तिनगर, दिल्ली में गत् 7 सितम्बर, 2023 एक दिवसीय आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की। इस अवसर पर आयोजित हुए यज्ञ के ब्रह्मत्व का पद आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने सुशोभित किया। कार्यक्रम में आर्य जनों ने उत्साह के साथ भाग लिया। इस अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, आर्य वेद प्रचार मण्डल उत्तरी दिल्ली के अध्यक्ष श्री ओम सपरा, स्वामी योगेश्वरानन्द, प्रो. अजीत कुमार, आर्य समाज देवनगर के मंत्री श्री राकेश बेदी आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही।

अपने ओजस्वी उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने स्व. माता लीलावती गुप्ता एवं उनके पति स्व. श्री ओम प्रकाश गुप्ता, स्व. श्री यशपाल ऋषि आदि को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए शक्तिनगर के अनेक संस्मरण प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि आर्य समाज शक्तिनगर के माध्यम से ही उन्होंने अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम किये और इस आर्य समाज का उन कार्यक्रमों में विशेष सहयोग रहा। स्वामी जी ने भविष्य में तैयारी के साथ कार्यक्रम आयोजित करने की प्रेरणा भी दी। स्त्री आर्य समाज की मंत्री श्रीमती कान्ता बाली, कोषाध्यक्ष श्रीमती निधि गुप्ता तथा उनकी अन्य सभी सदस्याओं ने भी कार्यक्रम में उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज के वीतराग संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती की श्रद्धांजलि सभा दिनांक 20 अगस्त, 2023 को हुई सम्पन्न

अनेक गणमान्य लोगों ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

स्वामी सच्चिदानन्द जी का देहावसान आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है - स्वामी आर्यवेश

यमुनानगर, आर्य जगत के प्रसिद्ध वीतराग संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज का गत् 16 अगस्त, 2023 को लम्बी बीमारी के पश्चात् देहावसान हो गया था। उनकी श्रद्धांजलि सभा 20 अगस्त, 2023 को विशाल स्तर पर आयोजित की गई, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालु जनों ने स्वामी जी को नम आंखों से अपनी श्रद्धांजलि समर्पित की। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से श्रद्धांजलि देने हेतु पधारे, उनके अतिरिक्त हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री श्री करणदेव कम्बोज, आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के प्रधान प्रो. आनन्द कुमार, आर्य केन्द्रीय सभा यमुनानगर के प्रधान श्री महेन्द्र सिंघल, आर्य समाज रेलवे रोड यमुनानगर के प्रधान श्री मोहित आर्य, युवा पत्रकार श्री सौरभ आर्य, आर्य समाज के बुड़िया के प्रधान श्री राकेश ग्रोवर, आर्य समाज जगाधारी वर्क्सशॉप के प्रधान श्री बृजेश आर्य आदि के अतिरिक्त लुधियाना, राजपुरा, अम्बाला, करनाल, पानीपत, गन्नौर, कुरुक्षेत्र के अतिरिक्त जगाधारी एवं यमुनानगर से सैकड़ों श्रद्धालुजन सभा में सम्मिलित हुए। श्रद्धांजलि सभा का संयोजन स्वामी जी के वैदिक ज्ञान आश्रम की मंत्री श्रीमती नीरज नरूला ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज का देहावसान आर्य समाज तथा राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। स्वामी जी का व्यक्तित्व सदैव हम सभी को प्रेरणा देता रहेगा। वे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सच्चे अनुयायी एवं वैदिक धर्म के प्रतिष्ठित प्रचारक संन्यासी थे। हम सभी को उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए संकल्प लेना चाहिए।

महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली, अमृतसर द्वारा राशन वितरण का कार्यक्रम सम्पन्न

जरूरतमंदों को पावन करने का रास्ता है सत्संग - ओम प्रकाश आर्य

दिनांक 1 अक्टूबर, 2023 को आर्य समाज, महर्षि दयानन्द धाम बाजार हंसली, अमृतसर, पंजाब में श्री ओम प्रकाश आर्य जी की अध्यक्षता में जरूरतमंद परिवारों को राशन वितरण करने का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सर्व प्रथम आचार्य दयानन्द शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ, हवन किया गया जिसमें सुलोचना आर्या ने यज्ञाग्नि में आहुतियां समर्पित की। इस मौके पर मुख्य अतिथि पं. चन्द्रशेखर शर्मा राष्ट्रीय नेता ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा, श्री बाल कृष्ण शर्मा चेयरमैन नशा विरोधी संगठन, श्री संजय सर्राफ प्रधान गोल्ड एण्ड सिल्वर एसोसिएशन, श्री राज कुमार योगाचार्य प्रभारी पतंजलि योग पीठ अमृतसर आदि विशेष रूप से उपस्थित हुए।

इस अवसर पर श्री राकेश आर्य, सुलोचना आर्या, सीता, नीलम, वंदना, शारदा बाधवा ने भक्ति भाव से भजनों को गाकर सबको मंत्र मुग्ध कर दिया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री ओम प्रकाश आर्य जी ने कहा कि पतितों की सहायता करने का रास्ता है उनकी जरूरत की सामग्री उन्हें उपलब्ध कराकर उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया जाये। आर्य समाज को इन्हें अपने सत्संग में बुलाना चाहिए और इन्हें सत्संग आदि में सम्मिलित होने की प्रेरणा देनी चाहिए जिससे ये अपने परिवार को वैदिक पथ पर चला पायें जिससे इनका कल्याण हो सके। सत्संग के माध्यम से ही समाज में फैल रही बुराईयों को, अन्धविश्वास, पाखण्ड, अतचार, नशाखोरी, जघन्य अपराध, भ्रष्टाचार जैसी कुरीतियों को दूर

किया जा सकता है। इन्हीं उद्देश्यों को सामने रखते हुए आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम ने हर महीने जरूरतमंद परिवारों को राशन देने के साथ सत्संग से जोड़कर धार्मिक उपदेश देते हुए आर्थिक और मानसिक खुराक देकर कमजोर वर्ग को उन्नत करने का प्रयत्न कर रहा है।

इस प्रकार के मानवता के कार्य में सर्वश्री अर्जुन कुमार, अशोक वर्मा, राज कुमार, पंकज, वर्मा, कमलेश रानी, गौरव आर्य, रितिका, अनिकेत आदि ने सहयोग देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

श्री ओमवीर सिंह के आमंत्रण पर गृह प्रवेश यज्ञ में स्वामी आर्यवेश जी हुए सम्मिलित

डॉ. सत्यपाल सिंह सांसद ने दी शुभकामनाएं

श्री ओमवीर सिंह जो दिल्ली पुलिस में सेवारत हैं और डॉ. सत्यपाल सिंह सांसद के साथ कई वर्ष से सुरक्षा अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने गत् 17 सितम्बर, 2023 को अपने नये घर में गृह प्रवेश यज्ञ आयोजित किया। इस यज्ञ को आचार्य रामपाल शास्त्री प्रधान होश्यिारी देवी कन्या इण्टर कॉलेज, रठौड़ा, बागपत ने सम्पन्न कराया। यज्ञ के उपरान्त उपस्थित पारिवारिक जनों एवं मित्रगणों के बीच स्वामी आर्यवेश जी ने गृह प्रवेश तथा गृहस्थ आश्रम से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये। सभी उपस्थित जनों ने उनके विचारों को बड़ी श्रद्धा और भावना के साथ श्रवण किया और अपने परिवारों में यज्ञ की परम्परा को प्रारम्भ करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर स्वामी जी के साथ श्री धमेन्द्र आर्य छपरौली तथा श्री अवनीश आर्य रठौड़ा भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के उपरान्त श्री ओमवीर सिंह ने स्वामी आर्यवेश जी तथा आचार्य रामपाल शास्त्री का शॉल एवं दक्षिणा आदि से सम्मान किया। सभी आगन्तुक महानुभावों के लिए प्रीति भोज की भी सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

लोग प्रतिमा की पूजा क्यों करते हैं?

- हरिश्चन्द्र वर्मा "वैदिक"

यह एक संस्कार के अनुसार उनका विश्वास है, जो हजारों वर्षों से उनके मन मस्तिष्क में जम गया है। यह छूटने वाला नहीं है।

प्रतिमा के माध्यम से कोई ईश्वर की पूजा नहीं करता, जिस देवी-देवता की मूर्ति मंदिरों में स्थापित की गई है उसी को शक्ति रूप जानकर उसकी पूजा करते हैं।

लोगों का 'काली, दुर्गा, शिव, श्री गणेश आदि पर इतना विश्वास हो गया है कि उनके नाम से मन्नत भी करते हैं। बहुत से लोग श्रीराम और श्रीकृष्ण को भी भगवान का अवतार मानते हैं। हमारे समझ में नहीं आता कि जो प्राण के समान ईश्वर सर्वत्र पूर्ण है वह कैसे अवतार ले सकता है? क्या गर्भ में नहीं था जो वहाँ उसे आना पड़ा। आना-जाना तो एकदेशी का होता है सर्वदेशी का तो हो ही नहीं सकता।

प्रश्न-जिस प्रकार बिना साकार (पाठशाला) माध्यम से कोई विद्यार्थी विद्वान् नहीं बन सकता उस प्रकार बिना प्रतिमा के भक्ति और बिना भक्ति के ईश्वर की पूजा सम्भव नहीं है। अतः साकार माध्यम से ही प्रेम और भक्ति उत्पन्न होती है, और जो दिखाई नहीं देता उसके प्रति भक्ति श्रद्धा कैसे उत्पन्न हो सकती है?

कंवरिया लोगों को ही लीजिए 60 वर्ष पहले कंवरियों का प्रचलन नहीं था। यदि शिव की मूर्ति मन्दिर में न रहे तो कोई भी कंवरिया दूर-दूर से गंगाजल लाकर शिव मूर्ति पर जल नहीं डालते, न पूजा करते।

देखिए जो दिखता है उसी को हम लोग पूजते हैं, बल्कि प्रतिमा के विश्वास और उनके पूजन का विस्तार बढ़ता ही जा रहा है। क्योंकि वह दर्शनीय होती है।

वैज्ञानिक भी अप्रत्यक्ष को नहीं मानते। बिना परीक्षण किये किसी भी अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते। वस्तु सत्य को ही मानते हैं।

उत्तर- क्या प्रेम दिखता है? माँ का प्यार दिखता है? हजारों गायों में बाछिया अपनी माँ के पास कैसे चली जाती है? क्या उसका ममत्व का आकर्षण दिखलाई देता है? क्या भूख-प्यास, स्मरणशक्ति दिखती है? क्या प्राण, मन, चेतना दिखती है। क्या पाठशाला में विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति दिखलाई देती हैं? नहीं। किन्तु हम सबको उन सबका ज्ञान अवश्य होता है, उसी प्रकार जो सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता सबका स्वामी है वह नहीं दिखता।

बुद्धिपूर्वक मानव शरीर एवं अनेक प्रकार के हिंसक अहिंसक प्राणियों के रचनाकार को किसी ने देखा है? विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों के बीजों की उत्पत्ति कैसे हो गई इन्हें भी किसी ने नहीं देखा है। भोक्ता के पहिले भोग्य पदार्थों की उत्पत्ति का हो जाना, गर्भ से बालक के जन्म के पहिले भोग्य पदार्थ माता में दूध की व्यवस्था हो जाना, इस प्रकार की वैज्ञानिक व्यवस्था बिना ईश्वरीय नियम के स्वयं प्रकृति नहीं कर सकती।

यदि प्रतिमा में भी ईश्वर है तो उस ईश्वर की उपासना क्यों नहीं की जाती? वैज्ञानिक लोग मूर्तियों की पूजा नहीं करते क्योंकि वे जानते हैं कि ईश्वर की मूर्ति नहीं बन सकती।

एक ईश्वर का भक्त नेत्र बन्द करके गायत्री मंत्र से प्रार्थना करके वह इतना उसकी भक्ति में मग्न हो जाता है कि उसकी आंखों से आंसू आने लगते हैं, यह प्रबल विश्वास की भावना है। क्या यह उसकी अन्तर मन की भावना, दूसरे को दिखलाई दी? नहीं दी पर जो आंखों से आंसू निकले वे ही देखे गये।

प्रतीक प्रतिमा की नहीं, किन्तु मैं भी मानता हूँ कि ईश्वर के ध्यान करने में प्रतीक का माध्यम अवश्य होता है, जैसे ओ३म् प्रतीक है पर वह किसी की मूर्ति नहीं है।

जितना स्वयं मूर्तिमान में आप ईश्वर को जानकर उसके आनन्द प्रकाश को प्राप्त कर सकते हैं उतना मूर्तियों से नहीं। क्योंकि प्राण सर्वत्र है किन्तु कृत्रिम मूर्ति में प्राण ग्रहण करने की शक्ति नहीं है और ये पुजारी लोग जो मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा कराते हैं वह ठीक नहीं क्योंकि किसी में यदि प्राण प्रतिष्ठा हो जाए तो उसमें हरकत होने लग जायेगी।

प्राण जड़ होते हुए वह ऊर्जावान है और वह एक ऐसा सूक्ष्म तत्व है, जिसके बिना प्राणी जीवित नहीं रह सकता। शरीर में स्वांस-प्रस्वांस की जो स्वाभाविक क्रिया हो रही है, वह भी एक प्रकार से प्राणायाम ही है, इसी से हृदय में हरकत हो रही है अतः मौलिक प्राण से प्राणापान की क्रिया अविरत चल रही है। तात्पर्य यह कि प्राण से मन का और मन से प्राण का सम्बन्ध है। प्राणायाम के द्वारा ही प्राण का बोध होता है। चंचल मन को प्राणायाम द्वारा ही वश में किया जा सकता है। ओ३म् प्रणव को प्राणायाम मंत्रों के जप के साथ हृदय अथवा भृकुटि के मध्य में ध्यान दृष्टि को एक करने से, और मन की गति रुकने से प्राण की गति रुकने लगती है। इन दोनों दैवी शक्तियों के मिलन से ध्यान करने वाले को उसे स्वयं ईश्वरीय अभौतिक प्रकाश का बोध होने लगता है। उस अवस्था में स्वअस्तित्व को भी भूल जाता है, किन्तु उस एकाग्रता में यदि तनिक भी मन विचलित हुआ नहीं कि ध्यान भंग हो जाता है और वह पूर्वावस्था में अपने आप में वापस आ जाता है। अर्थात् आनन्दमय कोश सूक्ष्म जगत से, मनोमय कोश में आ जाता है। तात्पर्य यह कि - ध्यान में मंत्र के साथ अपने (चेतना) को तन मन से (आज्ञाचक्र) भृकुटि में "तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्" (योगदर्शन) एक करने में दूसरी कोई वृत्ति न आने पावे का अभ्यास करते रहना चाहिए। अतः (योगश्चित्त वृत्तिनिरोधः) चित्त की वृत्तियों के निरोध का नाम ही योग है। इस प्रकार अष्टांग योग ही ईश्वर प्राप्ति की सीढ़ी है।

यही परमेश्वर की सच्ची पूजा है, इस साधना पूजा में, न डोलची न फूल, न फल, न दीपक, न घन्टी बजाने की आवश्यकता होती है, उसे तो शुद्ध एकान्त स्थान चाहिए।

'न तस्य प्रतिमाअस्ति' यजु. 32/8

प्रश्न- श्री राम, कृष्ण आदि भी मूर्ति पूजा करते थे कि नहीं?

उत्तर : देखिये हम जिन देवी-देवताओं अर्थात् शक्तियों की प्रतिमा बनाते हैं वे सब काल्पनिक हैं। प्रतिमा से न हमारे दुःख दूर हो सकते हैं और न ही वे हमें ज्ञान दे सकते हैं। यदि हम प्रतिमा के सामने गीता रखकर कहें कि हे माँ अथवा हे शिवजी इसका ज्ञान करा दीजिए तो क्या हमें उसका ज्ञान करा सकते हैं? नहीं, किन्तु उसी को यदि चेतन गुरु के पास जाकर कहें कि इसका ज्ञान करा दीजिए तो वह करा देंगे।

इसी प्रकार रोग भी देवी-देवताओं की मन्नत से कभी ठीक नहीं हो सकता, उसे तो डाक्टर ही चिकित्सा द्वारा औषधियों से ठीक करते हैं। जिन्हें देवी-देवताओं की प्रतिमा पर विश्वास है और जो तीर्थ करने जाते हैं और जो कहते हैं कि मन्नत से मेरा अमुक रोग ठीक हो गया, मेरा कार्य सफल हो गया। तो क्यों नहीं अपने ब्लडप्रेशर, शूगर, वातराग, कुष्ट व्याधि, उदर रोग आदि बिमारियों को छुड़वा लेते हैं? क्यों डाक्टरी चिकित्सा द्वारा दी गई औषधियों का व्यवहार करते रहते हैं?

मूर्तिपूजक कहते है कि दवा के साथ दुआ की भी आवश्यकता होती है, उत्तर-दुआ, माता-पिता, आचार्य से मिलती है इनके अलावा ईश्वर की प्रार्थना से भी प्राप्त की जाती है।

यदि मूर्तियों में इतनी शक्ति मानते हैं, तो मुसलमान लोग सैकड़ों वर्षों तक सोने चांदी, हीरे जवाहरात से जड़ी हुई मूर्तियों को नष्ट करते रहे और उनके धनों को लूटते रहे तब उन मूर्तियों की शक्तियाों ने क्यों नहीं उनका नाश किया, जबकि उन्होंने 700 वर्ष भारत में राज्य किया।

पश्चात् अंग्रेजों ने 200 वर्ष के शासन काल में भारत के साहित्य और आर्यों के इतिहास को बिगाड़ कर रख दिया आज भी उसी अनार्यता के इतिहास को स्कूलों में पढ़ाया जा रहा है।

प्रतिमा पूजन, गंगास्नान और तीर्थ करने से पाप नष्ट नहीं होता। तीर्थ स्थानों के देशाटन से वहां के साधु-संतों के दर्शन और वायु जलादि से शरीर और मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। बलात्कार करने वाले, गर्भपात भ्रूणहत्या करने वाले, भ्रष्टाचारी, मानव हत्या करने वाले और माता-पिता को कष्ट देने वाले ये सब पापी हैं। चाहे कोई कितना ही, पूजा पाठ करे, पूर्व एवं वर्तमान में किये गये कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। बिना दुःख भोगे अनुचित कर्मों का फल नष्ट नहीं होता। जो जिस प्रकार का अन्याय-अधर्म किया है, उसे उसी प्रकार से उतने दिन के लिए कभी न कभी दुःख (सजा) भोगना ही पड़ता है।

यदि मूर्ति की ही पूजा करनी है तो आप तो स्वयं मूर्तिमान हैं, आप में सभी दैवी शक्तियों का वास है, तभी तो बुद्धि, चित्त, चेतना से युक्त आपकी सभी ज्ञानेन्द्रियां कर्मेन्द्रियां सक्रिय हैं। अतः आपको अपने अन्दर की शक्तियों को योगाभ्यास द्वारा जागृत करना है, तभी आप अपनी जीवन शक्ति आत्मा को जान पायेंगे। जब आत्मा को समझ लेंगे तब आत्मा में विद्यमान को भी जान पायेंगे, उस अवस्था में सभी संशय दूर हो जायेगा।

प्रश्न-आप जो लिख आये कि क्या प्रेम, प्यार, ममत्व,आकर्षण, भूख, प्यास, स्मरण, प्राण, मन और चेतना दिखता है? किन्तु ये सभी तो साकार माध्यम से ही उत्पन होते हैं, तो फिर साकार प्रतिमा की पूजा क्यों न की जाए?

उत्तर-देखिये उपरोक्त जो विषय है वे सब चेतन प्राणियों से उत्पन्न होते हैं, मिट्टी पत्थर की बनी हुई मूर्तियों से नहीं, और एक बात-शक्तियों की मूर्तियां तो बन ही नहीं सकतीं?

क्या वायु, मेधा, श्री कल्याण पालन, संहार और सवितादेव की मूर्तियाँ बन सकती हैं? जो बनाई गई हैं अथवा जो बनाई जाती हैं वे सब काल्पनिक हैं, किन्तु जो काल्पनिक नहीं है वह जीता जागता मनुष्य है, उसे अपने में ही मंत्र द्वारा देवों के देव महादेव परमेश्वर को श्रद्धा और विश्वास के साथ जानने का प्रयास करना है, किन्तु ऐसा न करके मनुष्य प्रतिमा पूजन को ही धर्म समझ रहा है।

प्रश्न-जिस प्रकार काल्पनिक सीरियल को लोग बड़े प्रेम से देखते हैं उसी प्रकार मूर्तियों को भी लोग बड़े विश्वास के साथ देव-देवी के रूप में मानते और पूजते हैं।

उत्तर- सीरियल मनोरंजन का विषय है, किन्तु ईश्वर (जिनमें सभी दैवी शक्तियाँ विद्यमान हैं) की प्रार्थना पूजा वाह्य मनोरंजन का विषय नहीं है।

तात्पर्य यह कि प्रतिमा पूजन से केवल नास्तिकता में कमी आती है और प्रतिवर्ष शिल्पिओं को रोजगार मिल जाता है, तथा उनको पुजवाने से पुजारी, पुरोहित को काफी दान-दक्षिणा मिल जाता है। बदले में यजमानों को क्या प्राप्त होता है वही जानें।

- मु. पो.-मुरारई, जिला-वीरभूम, (प. बंगाल)-731219

वेद और साइंस का सादृश्य

—श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

स्वामी दयानन्द की यह स्थापना थी कि वेदों में समस्त ज्ञान बीज-रूप में विद्यमान है और उनकी शिक्षाएँ पूर्णतः विज्ञानमूलक हैं। पश्चिम के लोगों को और पाश्चात्य-शिक्षा प्राप्त अन्य अनेकों को यह स्थापना अयुक्तियुक्त और अतिशयोक्ति पूर्ण जान पड़े तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है क्योंकि विज्ञान और धर्म का पारस्परिक संघर्ष कई शताब्दियों पर्यन्त यूरोप के इतिहास की एक मुख्य घटना रही है।

पश्चिमी यूरोप में विज्ञान का सर्वप्रथम सूत्रपात अरब के निवासियों के द्वारा हुआ जिन्होंने बहुत से यूनानी ग्रन्थों का अनुवाद किया, कॉलेज स्थापित किए और गणित, बीजगणित और त्रिकोणमिति का विकास किया और खगोल शास्त्र, रसायन शास्त्र एवं भौतिक शास्त्र की नींव डाली। परन्तु शीघ्र ही विज्ञान वेत्ताओं की इसाई चर्च के साथ अनवन हो गई क्योंकि विज्ञान की ऊहापोह में उन्हें अपनी धार्मिक मान्यताओं के लिए गम्भीर चेतावनी दीख पड़ने लगी। नास्तिकों पर अभियोग चलाने और उन्हें दंडित करने के लिए रोमन चर्च द्वारा 13वीं शती में निरन्तर धार्मिक न्यायालय बड़े निर्मम और क्रूर बन गये थे। तारक्वेन्दा ;ज्ंतुनमदकंद्ध ने जो 18 वर्ष तक धार्मिक न्यायालयों का प्रमुख अधिकारी रहा था तख्तों से बांध कर 10220 व्यक्तियों को जिन्दा जलाया, 6860 के पुतले जलाए और 97321 व्यक्तियों को अन्य प्रकार से दंडित किया। चर्च के क्रोध का शिकार बनने वाले प्रसिद्ध विज्ञान वेत्ताओं में गैलीलियों और बूनों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। गैलीलियो पर इस आरोप के आधार पर अभियोग चलाया गया कि उसका विश्वास कौपरनिकन (ब्वचमतदपबंद) सिद्धान्त में था अर्थात् पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है न कि सूर्य पृथ्वी की। क्रूर यातनाओं के भय से उसने यह मान लिया कि सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है परन्तु बाद में पुनः उसने अपनी इस मान्यता का खण्डन कर दिया। जिसके परिणाम स्वरूप वह जेलखाने में डाल दिया गया। अनेक ब्रह्माण्डों की शिक्षा देने के आरोप पर ब्रूनों जीवित जला दिया गया। रिफर्मेशन (सुधार) युग का आरम्भ होने पर विज्ञान और वैज्ञानिकों को दंडित किया जाना प्रायः बन्द हो गया था।

इस्लाम मत भी ज्ञान-विज्ञान के प्रसार के प्रति बहुत सहिष्णु न था। खलीफा उमर अथवा उसके प्रधान सेनापति अमरू की जिसके आदेश से 7 वीं शती में सिकन्दरिया का विशाल पुस्तकालय नष्ट किया गया था। यह उक्ति प्रसिद्ध है कि ''यदि कोई ग्रन्थ वही शिक्षा देता है जो कुरान में उल्लिखित है तब वह ग्रन्थ व्यर्थ है और यदि वह कुरान के ज्ञान के विरुद्ध शिक्षा देता है तब वह नास्तिक ग्रन्थ है और नष्ट कर दिया जाना चाहिए।''

वैदिक धर्म के इतिहास में विज्ञान और विज्ञान वेत्ताओं के दमन का एक भी उदाहरण नहीं मिल सकता। इसका कारण जानने के लिए दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। 'वेद' शब्द का अर्थ है 'ज्ञान' जो विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है 'जानना'। अंग्रेजी का शब्द 'विदू' (ज्ञान) भी इससे मिलता-जुलता है। इस प्रकार 'विद्' शब्द का वही महत्व है जो 'साइंस' शब्द का है जो लैटिन शब्द 'सिओे बपव' से बना है जिसका अर्थ है 'जानना'। प्राचीन भारत में समस्त ज्ञान-विज्ञान का स्रोत और आधार वेद माने जाते थे। वैदिक साहित्य के अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग इस प्रकार थे :—

(1) चार उपवेद- आयुर्वेद, अर्थवेद, गंधर्ववेद, धनुर्वेद।

(2) छः वेदांग- शिक्षा, कल्प धर्म सूत्र, श्रोत सूत्र सुल्व सूत्र) व्याकरण, निघण्टु, ज्योतिष।

(3) छः उपांग- दर्शन तर्क शास्त्र, अध्यात्म शास्त्र, मनोविज्ञान, आचार-शास्त्र, भौतिक शास्त्र)

वेदों में समस्त ज्ञान बीज रूप में विद्यमान है यह मान्यता संस्कृत साहित्य से परिपुष्ट है। शतपथ ब्राह्मण में हम पढ़ते हैं-

स ऐक्षत प्रजापतिः त्रय्याँ वाव विद्यायां सर्वाणि भूतानि हन्त

त्रयीमेव विद्या मात्मानमाभि संस्करवै इति-शत।

10/4/2/21-22

समस्त प्राणियों के स्वामी ने अपने विश्व का यह कहते हुए परिवेक्षण किया ''समस्त प्राणी तीन विद्याओं में ग्रथित हैं अर्थात् वेद में। आत्मा के सुधार वा संस्कार के लिए मुझे एकमात्र इस नयी विद्या का प्रयोग करना है।

तैत्तिरीय ब्राह्मण में भी इसी बात की पुनरावृत्ति देख पड़ती है :-

''अथ सर्वाणि भूतानि पय्यैक्षत। स अय्यामेव विद्यायां सर्वाणि भूतान्यपश्यत।

अत्र हि सर्वेषां छन्द सामात्मा सर्वेषां स्तोमानां सर्वेषां प्राणनां सर्वेषां देवानाम्।

एत द्वै अस्तिः एतद्ध्यमृतम्। यद् ह्यमृतं तद् ह्यस्ति एतदु तद् यन्मर्त्यम्।

तब परमात्मा ने समस्त भूतों का परिवेक्षण किया। उसने समस्त भूतों को नयी विद्या में निहित देखा। यही समस्त छन्दों की, स्तोमाओं की समस्त जीवन और ज्ञान की आत्मा है। यही अमरत्व और नाशवान् प्राणियों के लिए जो चाहिये वह यही है।

वेदों को त्रयी विद्या इसलिए कहते हैं कि इनमें (1) ज्ञान (2) कर्म और (3) भक्ति (उपासना, प्रार्थना) का वर्णन है अर्थात् ये मानवमस्तिष्क की तीन प्रक्रियाओं- ज्ञान, इच्छा और अनुभूति- की द्योतक हें। इस बात की वेदों के 4 विभागों अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद से भी असंगति नहीं है जिनमें ज्ञान के सामान्य और विशेष ये दो उपविभाग नहीं है। ऋग्वेद (ऋचाओं का वेद) में सामान्य ज्ञान का, यजुर्वेद (यज्ञों का वेद) में यज्ञों का कार्यों का, सामवेद में भक्ति और उपासना का और अथर्ववेद में विशेष ज्ञान का वर्णन है।

स्वामी दयानन्द को वेद भाष्य की एकमात्र प्रचलित परिपाटी को अंगीकार करने में सन्तोष न हुआ। उन्होंने अपनी ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में अनेक उद्धरण देकर यह सिद्ध किया कि वेद की शिक्षाएं सर्वथा विज्ञानमूलक है और अनेक वैज्ञानिक सत्यों का वेदों में उल्लेख वा सकेंत हैं जिनका एक या दो शताब्दियों पूर्व यूरोप को पता भी न था। उदाहरणार्थ वेद के सृष्टि उत्पत्ति के सिद्धान्त को ले लीजिए जो अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं मानता। इस्लाम, ईसाइयत और यहूदीमत ये तीनों अभाव से सृष्टि की उत्पत्तित मानते हैं जो सर्वथा अवैज्ञानिक है। वेद बताते हैं कि सृष्टि की उत्पत्ति अनादि प्रकृति से होती है। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ऋग्वेद का नास दीय (ऋग0 मं. 8, 7, 10 और यजर्वेद अं0 31) का पुरुष सूत्र उद्धृत किया है। तैत्तिरीय उपनिषद् के निम्नलिखित मंत्र में सृष्टि उत्पत्ति का बड़ा विशद और बुद्धि संगत प्रकार वर्णित है-

तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः संभूतः आकाशद्वायुः वायोरग्नि अग्नेरापः।

अद्भ्य पृथिव्या, पृथिव्या ओषधया ओषधिभ्योऽन्नम् अन्नाद्रेतोरेतस् पुरुषः।।

निश्चय ही उस परमात्मा से आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथिवी, पृथिवी से औषधि, औषधि से अन्न, अन्न से वीर्य और वीर्य से पुरुष उत्पन्न हुआ।

यह नहीं मान लेना चाहिए कि एकमात्र स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही वेदों का बुद्धि संगत और विज्ञान मूलक भाष्य किया है। ब्राह्मण ग्रन्थों और यास्क के निरुक्त में जो अत्यन्त प्राचीन भाष्य सन्निहित हैं उन्हीं के अनुरूप स्वामी जी का वेदभाष्य है सांख्य दर्शन में कहा गया है- ''बुद्धिपूर्वा वाक्य कृतिवेदे'' ''वेद में वर्णित विषय बुद्धि पूर्वक है।'' सायण, महीधर आदि मध्यकालीन भाष्यकारों ने अपने युग अर्थात् पौराणिक काल की गर्हित ब्रह्म विद्या का अनुसरण करते हुए वेदों के माथे अंधविश्वासपूर्ण क्रियाकलाप और अवैज्ञानिक मान्यताएँ थोप दी हैं। स्वामी दयानन्द वह महानुभाव थे जिन्होंने अपने विशुद्ध भाष्य से वैदिक धर्म को प्राचीन पवित्र रूप प्रदान किया और दिखा दिया कि वेद की शिक्षाएँ नितान्त विज्ञानमूलक हैं। ऐसी स्थिति में सच्चे धर्म और सच्ची साइंस में विरोध क्योंकर हो सकता है? क्योंकि दोनों का स्रोत परमात्मा है और दोनों ही दिव्य गुण बुद्धि पर अवलम्बित हैं जिसके द्वारा मनुष्य परमात्मा की वाणी (वेद) और उसके कार्य (प्रकृति) को समझने में समर्थ होता है।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

1100/— रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई—मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

—: प्रकाशक :—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002

दूरभाष — 011—23274771, 011—42415359, मो.:—9868211979, 8218863689

ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-42415359, 23274771)

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी का 85वाँ जन्मोत्सव एवं विश्व शांति दिवस 21 सितम्बर, 2023 को 7, जन्तर–मन्तर रोड, नई दिल्ली पर मनाया गया

21 सितम्बर, 2023 को 7 जन्तर–मन्तर रोड, नई दिल्ली पर सार्वदेशिक सभा के मंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी की अध्यक्षता में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी महाराज के 85वें जन्मोत्सव एवं विश्व शांति दिवस का कार्यक्रम सायंकाल 3 बजे आयोजित किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्ता श्री ललन राय, श्री घनश्याम मुरारी तथा बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ता श्री अशोक वशिष्ठ जी, जावेद जी, श्री सोनू जी, श्री भण्डारी जी, श्री संतोष जी सहित अन्य महानुभावों ने पहुंचकर स्वामी अग्निवेश जी महाराज को याद करते हुए उनके द्वारा किये गये कार्यों पर विशेष चर्चा की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के

मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने बताया कि मैं जब बचपन में पढ़ाई करता था हैदराबाद में स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश जी के विचार सुना था और तब से लेकर आज तक उनके क्रांतिकारी विचार मन–मतिष्क में चलते रहते थे। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी महाराज ने अपना पूरा जीवन आर्य समाज एवं वैदिक विचारधारा के लिए लगा दिया। वे भी चाहते हो तो मौज की जिन्दगी जी सकते थे, परन्तु उन्होंने अपना पूरा जीवन मानवता के उपकार के लिए लगाया। ऐसे महामानव आज हम सबके बीच भले ही नहीं हैं, परन्तु उनके विचारों से प्रेरित होकर हम सभी को आर्य समाज एवं वैदिक विचारधारा के अनुसार समाज एवं राष्ट्र के लिए कार्य करते रहना चाहिए, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस अवसर पर बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कोषाध्यक्ष श्री विष्णुपाल जी ने भी स्वामी जी के साथ कार्य करने का अनुभव बताते हुए भावुक हो गये। इनके अतिरिक्त अन्य कार्यकर्ताओं ने भी अपने–अपने उद्‌गार व्यक्त किये।

गुरुकुल धीरणवास जिला–हिसार का स्थापना दिवस समारोह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से हुआ सम्पन्न

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही वैदिक संस्कृति सुरक्षित रह सकती है – स्वामी आर्यवेश

स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित गुरुकुल धीरणवास का स्थापना दिवस गत् 6 सितम्बर, 2023 को गुरुकुल के प्रांगण में धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज की जन्माष्टमी का पर्व भी प्रतिवर्ष की भांति गुरुकुल में उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रातः गुरुकुल की यज्ञशाला में आचार्य देवदत्त शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ और उसके पश्चात् गुरुकुल के कुलपति स्वामी आर्यवेश जी का सार गर्भित व्याख्यान श्रोताओं को सुनने को मिला।

स्वामी जी ने स्व. स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के जीवन पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए बताया कि स्वामी जी महाराज उच्च कोटि के त्यागी एवं तपस्वी संन्यासी थे। उन्होंने अपना सर्वस्व इस गुरुकुल के संचालन में लगाकर एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया था। स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त गुरुकुल के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी, हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री चौ. हरि सिंह सैनी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। बाद में कार्यक्रम के पश्चात् कार्यकारिणी की बैठक आहुत की गई जिसमें सभी सदस्यों

ने उत्साह के साथ भाग लिया। बैठक में गुरुकुल के मंत्री श्री दलवीर आर्य ने गुरुकुल की गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला और सभी सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीति भोज की भी सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसे महानुभावों ने प्रसाद ग्रहण किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पूर्व मंत्री श्री सत्यवीर सिंह शास्त्री की स्मृति में विशाल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन दिनांक 27 अगस्त, 2023 को नांदल भवन, बोहर, रोहतक में हुआ

अनेक आर्य नेताओं ने सभा में पहुंचकर अपनी ओर से श्रद्धांजलि दी

श्री सत्यवीर सिंह शास्त्री जी एक संघर्षशील आर्य नेता थे – स्वामी आर्यवेश

अपने संकल्प के प्रति समर्पित रहते थे शास्त्री जी – आचार्य विजयपाल

आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के पूर्व मंत्री श्री सत्यवीर शास्त्री जी का गत् दिनों देहावसान हो गया। उनकी स्मृति में एक विशाल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन नांगदल भवन, ग्राम–बोहर, जिला–रोहतक में किया गया था जिसकी अध्यक्षता गुरुकुल झज्जर के आचार्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पूर्व प्रधान आचार्य विजयपाल ने की। मंच का संचालन गुरुकुल के युवा स्नातक श्री कृष्ण शास्त्री ने किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त आचार्य विजयपाल जी, दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार प्रो. वीरेन्द्र, पूर्व विधायक चौ. ओम प्रकाश बेरी, रोहतक से वर्तमान विधायक श्री भारत भूषण बत्रा, पूर्व मंत्री श्री मनीष ग्रोवर, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के डीन प्रो. सुरेन्द्र कुमार, गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व सिनेटर श्री रणवीर सिंह शास्त्री, सभा के पूर्व प्रधान श्री रामपाल दहिया, चौ. राज सिंह नांदल, बोहर, चौ. ओम प्रकाश नांदल प्रधान नांदल खाप आदि अनेक गणमान्य महानुभावों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। श्रद्धांजलि सभा में हजारों की संख्या में आर्यजनों ने भाग लिया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-42415359, 23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।